सखी श्याम ने स्वयं कहा

सखी श्याम ने स्वयं कहा, "जब प्रीत से मुझे बुलायेगी।
तुरन्त ही दौड़ा आऊँगा, तू हृदय में मुझ को पायेगी।।

विश्वास सों हो मन भरा हुआ, श्रद्धा सों हो वह छलक रहा।
इक चाहना हो केवल मेरी, जग सों हो मन दूर हुआ।।

बिन जल ज्यों मछली तड़पे, मन हो प्रेम में तड़प रहा।
बिरह सही न जाये तुझ से, नीर नयन से बरस रहा।।

अखियाँ अन्य को देखें न, मुझको ढूँढें हर धाम में।
जब जब जिसको यह देखें, लीन होयें मेरे ध्यान में।।"

मैं क्या माँगूँ अब मन उससों, मेरे राम रहे हैं मुझे पुकार।
उठ तू मना वा चरण में जा, यह तन मन दे सब उसपे वार।।

परम पूज्य माँ

(मई, १९५९)

अनुक्रमणिका

३ **प्रेम सभी से, सभी के लिए होता है!**
श्रीमती पम्मी महता

८ **हम जैसे कीट पतंग, गुमान से भर ही जाते हैं!...**
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१३ **दिव्य जीवन...**
स्वर्गीय पूज्य छोटे माँ द्वारा संकलित

१८ **...कौन चाह समिधा तेरी, कौन अग्न यह देख ले!**
'मुण्डकोपनिषद्' में से

२१ **मेरी शब से सहर और सहर से शब आप ही आप में गुज़र जाती!**
श्रीमती पम्मी महता

२६ **अपना नाम ही नहीं रहे, जो रहे वह समर्पण है!**
अर्पणा प्रकाशन 'प्रज्ञा प्रतिभा' में से

३१ **ज्ञान को अक्षरशः मान लिया...**
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

३६ **अर्पणा समाचार**

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा २६ अगस्त २०१७ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

प्रेम सभी से, सभी के लिए होता है!

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य माँ के साथ परिवार के कुछ सदस्य

आईये, श्री हरि माँ! अतीत के कुछ पन्ने, जो सजीव हो कर आंतर में पड़े हैं, उन्हें दोहरायें। कितना अच्छा लगेगा आपको भी, मेरी तरह दोहराते हुये... हैरत होती है मुझे, कैसे कोई करम कर जाता है और चुपचाप इसके निशां हृदय-पटल पर छोड़ जाता है, यह सिलसिला चलता ही जा रहा है...

आप की अनन्त यात्रा के यह क़दम ही तो हैं, जो मेरे लिए आप चलते ही चले जा रहे हैं। इन क़दमों को रुकते हुये नहीं देखा, touchwood! ईश्वर से करबद्ध प्रार्थना है मेरी, यही मेरी तहेदिल से दुआ भी है और आप से याचना-प्रार्थना भी... जब तलक आप मुझे अपने में विलीन नहीं कर लेते, इस निरन्तरता को अपनी इस कनीज़ के जीवन में बनाये रखियेगा। आमीन!

यही वह दस्तक थी जो प्रथम बेला में आपने मुझे फ़ोन पर दी थी, "पम्मी, मैं आधे घण्टे में पहुँच रही हूँ।" ज़ाहिर है, आपने मुझे इतना वक्त दे दिया कि मैं आपके लिये तैयारी कर सकूँ। मैं बहुत आनन्दित हुई कि आप इस कनीज़ के घर आ रहे हैं और रात यहीं रहेंगे...

मैंने ऊपरी छत से नीचे गद्दे डालने शुरु किये ताकि आपके लिये कमरा तैयार कर लूँ। आप मेरे ख़ास जो आ रहे थे... दूसरे, स्थूल स्तर पर हमारे घर पर, पड़ने वाला आपका यह पहला क़दम था। ज़मीन पर पाँव नहीं टिक पा रहे थे। वक्त बहुत ही कम था। 'कैसे हो पायेगा..!' फिर जैसे-तैसे जो भी कर पाई, उसमें बस एक लग्न आपकी ही थी। इसलिए भाग-भाग कर करने की ललक ने मुझे कैसे न कैसे हिम्मत दे दी थी।

जैसे-तैसे जो भी बन पड़ा कर लिया... यह भी विचार आया, 'भगवान तो भाव के भूखे होते हैं!' आप तो माँ, बिन कहे ही बहुत कुछ कह देते, जिसकी हर छाप आंतर में बड़े गहरे में उतर जाती... इसका पूरा श्रेय केवल आप दाता को है, आप भगवान जी को है, इसलिए मेरे लिए बहुत ही अनमोल है!

ऐसे मूल्यवान गुण आपके सिवा किसके पास हो सकते हैं... और कैसे आप उदारता से दे भी देते हैं दूसरे को! आपके लिये मैं दूसरी न हो कर, जैसे 'आप ही की हूँ'। मुझे बड़े ही प्यार से दे रहे थे, जैसे आपने मुझे अपने प्यार में बाँध सा लिया था।

बड़ा ही अनमोल व अटूट बन्धन था, जिसे शब्दों राही तो ब्यां ही नहीं किया जा सकता... यह एक एहसास था जिसे केवल महसूस करते हुये बड़ी ही कृतज्ञता से, नतश्री बारम्बार हो जाती और आपके जाने के बाद वह अविरल धारा की तरह अखियों से बह जाती। मेरा रोम-रोम तो जैसे आप कृपालु दयालु नाथ के प्रति नतश्री हो रहा था।

हे माँ, आपकी इस मुहब्बत को क्या नाम दूँ? कुछ सुझाई भी तो नहीं दे रहा था... बस हृदय छलक-छलक जाता और धन्य धन्य महसूस करती चली जाती! कई बार जीवन में कुछ ऐसे पल आते हैं, जिन्हें शब्द देने किस क़दर कठिन हो जाते हैं... मगर हृदय एहसास से भरपूर हुआ रहता है।

अपने सद्गुरु के लिये जो भी करूँ, कम ही लगता... उनके मुताबिक कोई कुछ कर भी तो नहीं पाता है। मगर आपको तो सभी क़बूल हो जाता, क्योंकि कहते हैं न, 'भगवान जी तो प्यार के भूखे होते हैं!'

आप माँ जो भी करते, उसके निशां मेरे जीवन को चलायमान रखते। याद है न आपको माँ, एक बार आपको तैयार होना था। कमरे की एक खिड़की खुली थी और उसमें स्याही की दवात पड़ी थी। आपने उसे उठाया, खिड़की बंद करी और वह दवात वहीं रख दी। जब तैयार हो कर आप बाहर आने लगे, आपने वह दवात उठाई व खिड़की खोल

कर उसे वहीं रख दिया जहाँ से उसे उठाया था। आपके इस छोटे से action ने मुझे बहुत कुछ सिखा दिया...

जहाँ जहाँ से भी आप गुज़रते आपके क़दमों के निशां मेरे हृदय-पटल पर अंकित होते जाते! आपके प्रति मेरी कृतज्ञता के भाव अनायास ही मेरी करबद्ध प्रार्थना में जुड़ कर, आपको नमन कर लेते व मैं धन्य धन्य हुई धन्यवाद ही करती जाती! मेरे जीवन में आपका हर क़दम आपके जीवन की यथार्थता को ब्यां करता जाता... इसका सारा श्रेय आपको देकर नतमस्तक हो, आपकी चरण-रज सीस चढ़ा लेती!

यह तो सही है कि गुण तो होते हैं मगर जीवन में ग्रहण कर पाना व उन्हीं गुणों में वर्तना, आप जैसे सद्‌गुरु से ही सीखने को मिल पाता है। यह भी सच है कि हृदय को पात्रता भी आप प्रभु माँ ही देते हैं...

जैसे हर रोज़, शायद आप आ जायें, यूँ ही आप प्रभु की इंतज़ार में रहती! इसलिए अपने प्यार के लिए कुछ भी करना आनन्दायक होता और रफ़्ता-रफ़्ता वही स्वभाव में परिणत हो कर सभी के लिए यूँ ही जीने का अंदाज़ बन गया। फिर अपने और पराये का भेद भी मिटने लगा। 'जैसे सहज ही सभी के लिए कुछ करने को मन करने लगता है'... इस तरह का भाव स्वभाव में रसने बसने लगा।

"home is where the heart is...' कुछ ऐसा ही कर दिया आपने इसे अपनी मेहर में ला कर! गुण जब सभी के लिए वर्तने शुरु हो जाते हैं तो भेदभाव भी ख़त्म होने लगते हैं।

निष्काम जीवन को जीने की यह पहली सीढ़ी थी जो आपने चढ़नी सिखाई। आप माँ ने अपनी मेहर में ला कर इसे, जीवन में

श्रीमती पम्मी महता अपने पति डॉ. रमेश महता के साथ

जीने का राज़ खोल दिया... मैं कृतसन्कृत हुई आप ही के प्रति नत रहने लगी!

जीवन में साधारणतया आप जब कुछ करते हो तो कई बार आपको लगता है कि उसने, यानि कि दूसरे ने reciprocate नहीं किया... मगर हमारे घर में ऐसा कुछ नहीं था। सभी के लिए सभी कुछ होता। सहज ही इसी लिए माँ आपका कहा, अनकहा समझ आ जाता और कुछ भी किसी के लिए भी करने में कोई थकान का एहसास ही नहीं होता था। मुझे आप ही की ख़ुशी matter करती। आप ही से पाया सब मेरे जीवन में विस्तार पाने लगा, क्योंकि आपकी हर देन मुझे बहुत अनमोल लगती!

जहाँ स्वयं प्रभु देने वाले हों तो वहाँ थकान किस क़दर बेमायना हो जाती है क्योंकि वहाँ तो करने में आनन्द ही आनन्द है। सच जानें कि आप प्रभु माँ के निमित्त ही मुझ में निष्काम भाव का जन्म हुआ व जीवन में उसका विस्तार भी यहीं से आरम्भ हो निरन्तरता पाने लगा।

सच माँ, आपने किस क़दर इस कनीज़ को निष्काम भाव से सच्ची सेवा का प्रसाद दिया! आपकी हर देन को मेरे जीवन में उतारने वाले भी तो आप माँ ही हैं... अपने में आप ही का बहाव देखती हूँ तो हृदय छलछला आता है। कृतज्ञता सों झुक कर मन ही मन आपके चरण स्पर्श करी आप ही की चरण-रज सीस चढ़ा लेती हूँ। कैसे कैसे आप वरदान बनीं मेरे जीवन में आये हुये हैं व मुझे जीने की राह दिखाये जा रहे हैं। आप माँ का कोटि कोटि धन्यवाद!

पहले आपको मेरे खिलाने में, जो कुछ भी मैं भेजती थी, उसमें मेरा मोह नज़र आ जाता तो उसे आप स्वीकार नहीं किया करते थे। 'मोह और प्यार की परिभाषा अलग-अलग है', यह सुन कर मैं हैरतज़दा हो जाया करती! मुझे तो केवल प्यार ही प्यार लगता... मगर आप ही ने सुझाया कि यह जीवन के दो पहलू हैं, 'मोह अपने लिये होता है और प्रेम सभी से सभी के लिए होता है।' यह भेद आप ही ने मुझे समझाया।

प्रेम का दूसरा नाम निष्काम भाव हैं जहाँ अपनी याद ही नहीं आती। यहीं से जीवन का विकास होने लगता है और राहें बदल जाती हैं... जहाँ 'मैं' नहीं आप ही आप मेरे जीवन को व्यवास्थित करते चले गये। न आप कहीं रुके और न ही मुझे रुकने दिया... सच्ची लग्न व सच्ची सेवा की नींव धर दी आपने! आपके इसी प्यार को मेरा शतः शतः प्रणाम!

जीवन आप ही की उज्ज्वल कांति से भर रहा था, हर स्तर पर... क्योंकि आप ही ने तो इसे चहुँ ओर से घेर कर अपनी ही महक से लबालब भर जो दिया था। सफ़र कितना भी लम्बा हो, वहाँ तो नज़र जाती ही नहीं थी। आप ही आपको देखती व आप ही के क़दमों को देखी देखी निहाल होती जाती।

आपके अद्‌भुत आकर्षण व सौंदर्य को देखी देखी निहाल हुई रहती और जिज्ञासा बनी रहती आप ही आप को आगे से आगे देखती चलूँ व सदक़ा उतारती चलूँ... जो आपके प्रकट उत्सव का इस क़दर दर्शन मिल रहा है!

- आप ही आप से की इल्तिजाओं...

- आप ही की गुज़ारिशों में...

- आप ही की इबादत में...

आपने इसे स्वयं लगाये रखा व अपनी असीम करुण-कृपा में इसे बाँधे रखा। यह अतीव अद्‌भुत देन है, आप सद्‌गुरु प्रभु जी की ही असीम करुण-कृपा का ही दिव्य प्रसाद है। आप विभूतिपाद ने इसे निरन्तर ग्रहण करना आरम्भ क्या किया कि इसे कहीं भी विश्राम ही नहीं करने दिया। बस इसे तो चलते ही चले जाना है...

आप कहाँ इसे ले जा रहे हैं? ऐसा कोई प्रश्न मन में उठने ही नहीं दिया। बस आपके आदेश को शिरोधार्य करते हुये, इसे स्थिर मन से चलते ही चले जाना है।

आप श्री हरि माँ का यह प्यार इतना अनूठा, अद्‌भुत व दिल को लुभाने वाला है कि इस जिज्ञासु मन की आगे से आगे आपको देखने की, आप से सीखने की ललक निरन्तर बढ़ती ही चली जाती है। जी चाहता है मेरा आंतर-बाहर आप ही आप से भर जाये। कोई भी पड़ाव न आये। बस चलती ही चलूँ... चलती ही चलूँ...

आप ही के शब्दों में याचना करती हूँ...

"अनन्य भक्ति कहाँ पाऊँ मैं,

अनन्य भक्ति भी तुम ही हो।
कहाँ जाऊँ प्रेम याचना को,

पिया प्रेम निधि भी तुम ही हो।।"

आप ही के पल्लू को पकड़ कर यही तहेदिल से मंगलयाचना व प्रार्थना है व आपसे अतीव विनीत भाव से गुज़ारिश है मेरी, आप ही आप से धन्य धन्य होती ही चलूँ। आमीन!

असीम श्रद्धा प्यार व भक्ति भाव से

आप ही की

अपनी पम्मी

हम जैसे कीट पतंग, गुमान से भर ही जाते हैं!
ज़र्रे जो कणमात्र भी नहीं, देख कैसे इतराते हैं!

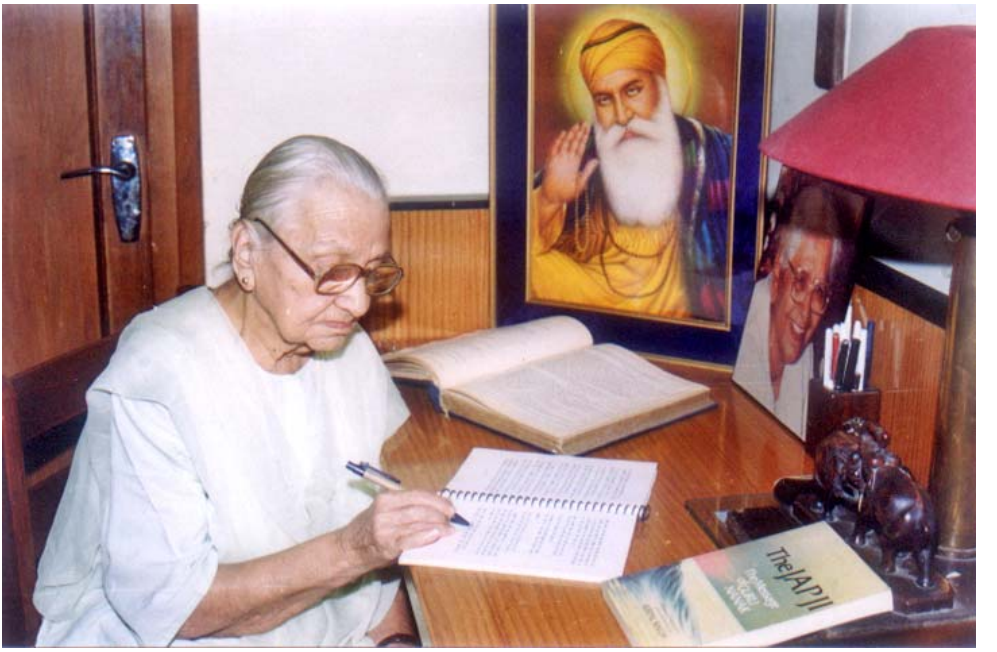

श्रीमति देवी वासवानी ने परम पूज्य माँ से अपने इष्ट श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में से 'जपु जी साहिब' का रहस्य जानने के लिए याचना की। परम पूज्य माँ ने हँस कर कहा, 'मुझे तो यह भाषा (पंजाबी) आती नहीं! आप भाषा के अर्थ बतलाते जायें तो मैं अपने मालिक गुरु नानक देव जी के श्री चरणों में अपनी प्रार्थना अर्पित करती जाऊँगी।' श्रीमति वासवानी की जिज्ञासा एवं प्रश्नों के परिणामस्वरूप यह प्रवाह परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से बह निकला।

गतांक से आगे–

पौड़ी ३२

इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस।
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस।
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस।

सुणि गला आकास की कीटा आई रीस।
नानक नदरी पोईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस।।३२।।

शब्दार्थ : *एक जिह्वा से लाख जिह्वा हो जायें तथा एक लाख से बीस लाख जिह्वा हो जायें, उनके साथ लाख-लाख बार एक परमेश्वर के नाम को कहें। इस मार्ग पर जो पति जी (परमात्मा) की सीढ़ियाँ चढ़ता है, वह ईश्वर से एकरूप ही हो जाता है। आकाश (महापुरुषों) की बातें सुनकर कीड़ों (मूर्खों) को भी रीस आ जाती है। हे नानक! ईश्वर को उसकी कृपा-दृष्टि से पाया जाता है। झूठों की बातें तो झूठ ही होती हैं (अर्थात् अपने बल से जीव उसे लाख पाने की कोशिश करे, वह उसे नहीं पा सकता)।*

पूज्य माँ :

एक से ज़बान लाख बने, लाख सों बीस लाख होये।
लाखों बार पुनि लाख कहें, जगदीश ही साँचो नाम कहे।।१।।

एक जगदीश इक ओंकार, जाने ज्ञान तब होये।
यही पथ पाद और सीढ़ी, पूर्ण में जाये लय होये।।२।।

कीट पतंग मासूम लाखों, सुनी ज्ञान गुमानी होये।
ग़रूर अहं करे हुक्म अदूली, ज़हूर प्रभु कहाँ होये।।३।।

नज़र प्रभु की राह एको, निर्विघ्न पथ वह होये।
हो मेहरबान बस मेरा मालिक, तब विघ्न एक न होये।।४।।

ओ मेरे मालिक नज़र तेरी, इक बेरी मुझपे होये।
रहमत तेरी हो जाये, यह मन भी मौन तब होये।।५।।

लाख बात यह ज़बान करे, गर रहमत तेरी न होये।
ज्ञान मिले मुझे लाख बार, सलाम भी पेश न होये।।६।।

तरस खा मुझपे मेहरबान, तू है ग़रीबनवाज़।
पारावार तेरा है ही नहीं, मेरा दिल है अज बेताब।।७।।

इल्तिजा आज करे, करे तुझको फ़रमान।
तेरा फ़रमान सुने नहीं, अज अहं करे फ़रमान।।८।।

पर क्या करूँ मेरे मालिका, मेरे साहिबा मैं क्या करूँ।
चरण पड़ूँ मेरे मालिका, मेरे साहिबा तोरे चरण पड़ूँ।।९।।

चरण पड़ी इतना कहूँ, मेरा हुक्म नहीं मेरी अर्ज़ है ये।
पूर्ण एको तू ही है, मैं जानूँ इतनी नज़र कर दे।।१०।।

ये करम कर मुझपे दिलबर तू, इतनी करुणा आज कर दे।
मैं कीट पतंग समान ही हूँ, पर अपनी चरण में मुझे धर दे।।११।।

मैं मुक्ति न माँगूँ युक्ति न माँगूँ, चरण अनुरक्ति न माँगे हूँ।
ज्ञान न माँगूँ जहान न माँगूँ, तेरी बन्दग़ी ही माँगे हूँ।।१२।।

तूफ़ान उठा मेरे हृदय में आज, तेरे नाम की महिमा माँगे हूँ।
अन्य विधि तू नहीं मिले, मिटे नामोनिशान मैं माँगे हूँ।।१३।।

अज यही माँगे हूँ :-

ज़बान की राह तू नहीं मिले, नाम लिये तू नहीं मिले।
ज्ञान की राह तू नहीं मिले, गान किये तू नहीं मिले।।१४।।

ज़बान से तू नहीं मिले, श्रवण से भी तू नहीं मिले।
कर्म की राह तू नहीं मिले, मन की राह तू नहीं मिले।।१५।।

एको राह बाक़ी रहे, तू उसे मिले जहाँ रहम करे।
ओ रहमतदिल तुझसे कहूँ, मुझको अपनी नज़र दे दे।।१६।।

कुछ तो मुझपे रहम कर, पावनकर तू दयानिधान।
उदारदिल तू दरियादिल, तू तो है करुणानिधान।।१७।।

दिलेबेक़रार वीराना दिल, बेज़ार दिल तेरे दर आई।
तूफ़ान लेकर तड़प का, बेपनाह तेरे दर आई।।१८।।

मैं गुनाह करी गुनाहगार तेरी, बेक़दर बेक़ाबू बेख़बर आई।
पर तेरी नज़र मुझे मिल जाये, जानूँगी करुणा तेरी पाई।।१९।।

इतना ही माँगूँ दर पे आ, दामन फैला के माँगे हूँ।
मुझे नाम की भिक्षा मिल जाये, तेरी चरण अनुरक्ति माँगे हूँ।।२०।।

भक्ति में शक्ति भर दे, नित नाम रहे यही माँगे हूँ।
हर रूप के पाछे तू ही है, हर भेस में तू यह जान मैं लूँ।।२१।।

इतना मैं माँगूँ बस माँगूँ राम, नानक तुमसे माँगे हूँ।
बेताब हूँ मैं दिलेबेक़रार, क़रार तुम्हीं से माँगे हूँ।।२२।।

जानूँ मुझसे कीट पतंग, गुमान भरी अभिमान चूर्ण।
पर आज चरण में आन पड़ी, मन देख है दुःख से पूर्ण।।२३।।

आज खेद ही मुझमें है, कुछ कुछ ख़ुद को जाने हूँ।
मैं एतबार क़ाबिल नहीं, यह भी कुछ कुछ माने हूँ।।२४।।

बेक़द्री तेरी मैंने करी, बेहद ही करी यह जाने हूँ।
पर तुमसे सुना गर नज़र मिले, मेरे पाप मिटें यह जाने हूँ।।२५।।

ओ मालिक मेरे तू मेहरबान, इतनी मेहरबानी हो जाये।
बस तेरे चरण में ही रहूँ, नाम नादानी न हो पाये।।२६।।

भगवान ने कहा कि :-

हम जैसे कीट पतंग, गुमान से भर ही जाते हैं।
ज़र्रे जो कणमात्र भी नहीं, देख कैसे इतराते हैं।।१।।

ज्ञान समझ के 'मैं' समझे, 'मैं' भगवान को पा लेगी।
गर मेहर ख़ुदा की न होगी, वह तो ज्ञान गँवा लेगी।।२।।

ज्ञान ने इतना ही तो कहा, 'मैं' की कोई जा नहीं।
ज्ञान ने इतना ही तो कहा, भगवान बिना कोई है ही नहीं।।३।।

हर नाम रूप भी उसका है, हर काज कर्म भी उसका है।
क्यों न मन मेरे छोड़ दे, यह सब कुछ ही जिसका है।।४।।

पर गुमान भरी इतराती हुई, बलखाती हुई मैं जाती हूँ।
भगवान ने ख़ुद ही देख कहा, 'सब वह है' मान न पाती हूँ।।५।।

अज तड़प करी मैं द्वार पड़ी, सीस झुकाने जाती हूँ।
माथ झुकाऊँ लाखों बार, पर फिर भी झुका नहीं पाती हूँ।।६।।

जब मन्दिर से अब लौटूँ मैं, फिर माथ यह देख उठाती हूँ।
पल को जो झुकी थी मन्दिर में मैं, फिर उसपे भी इतराती हूँ।।७।।

झुकाव पे भी इतराती हूँ, मैं ज्ञान पे भी इतराती हूँ।
गुमान भरी मैं जाती हूँ, गुमान भरी मैं आती हूँ।।८।।

इस कारण वह भी कहते हैं, मैं कीट पतंग रह जाती हूँ।
इक बुलबुला उठा और पुनि मिटा, मैं उठती और मिट जाती हूँ।।९।।

मैं माटी से उभरी, पुनि माटी ही बन जाती हूँ।
भगवान की मूर्त अपना कर, उसे माटी ही बनाती हूँ।।१०।।

क्या करूँ, कुछ कहना बनता भी तो नहीं! क्या कहें! सब कुछ कर करा के हम कह देते हैं- 'हम बेक़सूर हैं, बेगुनाह हैं। गुनाह किसी और का, क़सूर किसी और का!' अपने गुनाह हम देखते नहीं। भगवान का कहा भी तो हम नहीं मानते। वह तो रहमत करते ही जाते हैं - हमने कब माना? हम बेख़बर हैं, बेपरवाह, बेफ़िकर हैं, बेअसर हैं। हम ही बेपरवाह हैं, हम ही गफ़लत में पड़े हैं, क्या करें! फिर भी, सब जानते हुए भी, यही कहते हैं :-

तू करुणापूर्ण है, तू है मेहरबान।
तू दयानिधि ही है, बस दे मुझको नाम।।१।।

तू ख़ुदावन्द है, दरयादिल तू है।
गुण गाये न मेरी ज़बान, पर तू है मेहरबान।।२।।

मैं महिमा गा न सकूँ, मैं तुम तक आ न सकूँ।
मैं तुझे बुला न सकूँ, पर तुझको पुनि कहूँ।।३।।

मैं तेरा तो नहीं हूँ, मैं तुमसे दूर रहूँ।
पर तुम तो कृपा करो, अज पुनि मैं तुझको कहूँ।।४।।

तुम मेरी मान लो, मैं मान न तेरी सकूँ।
जो कहो वह तुम ही तो करो, मैं कही तेरी न करूँ।।५।।

पर फिर भी नज़र करो, फिर भी मेहर करो।
आज सच ही तड़प गया, कुछ तो कृपा करो।।६।।

बेकसी मेरी देखी, मरहम लगा तुम दो।
बेरहम मैं तो हूँ, पर तुम तो नज़र करो।।७।।

- क्रमश

दिव्य जीवन...

स्वर्गीय पूज्य छोटे माँ द्वारा संकलित

महापुरुषों का जीवन भी हमारी तरह ही विभिन्न परिस्थितियों से भरपूर होता है। जिन परिस्थितियों में साधारण जीव विचलित हो कर तड़प जाता है उसे महापुरुष सहज ही जीवन में ले लेते हैं। उनके दर्शन करके यही भाव उठता है कि आप धन्य हैं!

दीर्घकालीन सम्पर्क का यह प्रसाद भी मिला और देखते देखते यह समझ में आया कि राम नाम में कितना बल है। उसमें वह दिव्य शक्ति विद्यमान है जिसके बल पर हर परिस्थिति सहज ही निकल जाती है। मानो सूली भी काँटा बन जाती है। पूज्य माँ के प्रवाह की पंक्ति याद आती है -

'प्रेम भक्ति में खोये जो, पतझड़ लगे बहार।'

परम पूज्य माँ

बाल्यावस्था में ही बिन दोष दिये सत्य का निरुपण

साधक ने जितना जितना अपने मन को साध लिया हो, वह उसका निजि धन बन कर साथ ही आता है। शास्त्रों में आता है कि साधना जन्म-जन्म से साथ आती है। जितना हम जाग जाते हैं, जितनी ज्योति आंतर में जल जाती है; वह हमारी अपनी कमाई बन जाती है। उतना उतना ही चित पावन होता जाता है। हमारा सोचने का ढंग बदलता चला जाता है। मनोआंतर में एक ज्योत जल जाती है और उस ज्योत की अध्यक्षता में हमारे सोचने का ढंग बदल जाता है। परिस्थिति के प्रति मनोझंकार बदल जाती है। मन के बादल छट जाते हैं। हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है। इसका प्रसाद पूज्य माँ के जीवन के प्रारम्भिक काल में ही उपलब्ध हुआ।

पूज्य माँ बतलाया करते थे कि बचपन में किसी ने उन्हें 'गधा' कह दिया। अब हमारे जैसे जीव को, जब कोई बात बुरी लगती है तो हम भड़क उठते हैं और आवेश में आकर उसका अर्थ निकाल कर दूसरे से लड़ भी पड़ते हैं कि 'तुमने मुझे ऐसा क्यों कहा?'

इसका परिणाम भी हम जानते हैं कि लड़ाई हो जाने पर बात कहाँ से कहाँ तक बढ़ सकती है। यह तो हम जैसे साधारण जीव के देखने का ढंग हुआ। अब यदि हम इसी परिस्थिति को साधक के दृष्टिकोण से देखें कि यदि साधक होते तो क्या करते? एक नन्हीं

बालिका परिस्थिति को बिन दोष दिये उसे ही सत्य मान कर, बिन किसी प्रकार के ज्ञान के वह इसे कैसे देखती है? इसका प्रत्यक्ष प्रसाद हमें माँ के जीवन से मिला।

पूज्य माँ ने इस बात का निर्णय करने के लिये कि परिस्थिति की सत्यता को किस प्रकार से परखा जाये? बाजार जाकर बच्चों वाला कलैंडर ख़रीद लाये। वहाँ पर चित्र सहित हर शब्द का अर्थ चित्रित किया हुआ था। उसे देख कर पूज्य माँ ने 'ग' से 'गधा' अर्थ को देखा और शीशे के सामने खड़े होकर, उस चित्र के साथ तुलना करने लगे कि 'मेरी सूरत तो इसके साथ नहीं मिलती। इसलिये मैं 'गधा' कैसे हो सकती हूँ?' दूसरे को भी दोष नहीं दिया बस इतना ही कहा कि उसे ग़लती लग गई होगी... मानो परिस्थिति की सत्यता को जाँच कर मन मौन हो गया।

बाल्यावस्था - सुखी कौन?

पूज्य माँ बचपन में जब पढ़ा करते थे, तो कक्षा में भी उनका दृष्टिकोण अपनी दिव्यता का प्रतीक था। कभी-कभी उन्हीं के श्री मुखारविन्द से जब उनकी घटनायें सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता था, तब पता चलता था कि पूज्य माँ का तो दृष्टिकोण ही निराला था।

वह स्वयं ही एक घटना के विषय में बतलाया करते थे कि एक बार हिन्दी की कक्षा में उनकी अध्यापिका ने पढ़ाते हुए कहा,

"गुरु नानक देव जी ने कहा है, नानक दुःखिया सब संसार।"

उस कथन की सत्यता को प्रमाणित करते हुए उन्होंने सारी कक्षा में प्रश्न किया, "क्या कोई जीव सुखी है? यदि ऐसी बात है तो वह हाथ खड़ा कर दे।" पूज्य माँ ने जब यह सुना तो सहज ही उन्होंने हाथ खड़ा कर दिया। उनकी अध्यापिका को यह सुन कर अतीव

आश्चर्य हुआ और वह कहने लगीं, "क्या तुम सच ही सुखी हो?" इस प्रश्न के साथ साथ वह उसी के विषय में पूछताछ करने लगीं। उन्होंने प्रश्न करना आरम्भ किया,

"क्या तुम्हें कभी क्रोध नहीं आया?"

पूज्य माँ ने उत्तर दिया,

"क्रोध आता है।"

फिर उन्होंने दूसरा प्रश्न किया,

"क्या कभी तुम्हें रोना नहीं आया?"

पूज्य माँ ने उत्तर दिया,

"रोना तो आता है।"

यह सुनकर सब बहुत आश्चर्यचकित हुए। परन्तु जब उत्तर का पता चला तो मन कृतज्ञतापूर्ण भाव से भर आया और धन्य धन्य पुकार उठा। वास्तविक रहस्य इतना ही था जिसे कोई अनुभवी ही बता सकता है। यह राज़ हमें पूज्य माँ के मुखारविन्द से सुनने के पश्चात् ही समझ में आया। पूज्य माँ ने बतलाया कि क्रोध, क्रोध बन जाता है जब हम दूसरे पर दोषारोपण करते हैं और आँसू, आँसू बन जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप हम दूसरे को दोषी ठहराते हैं।

कॉलेज में प्रार्थना के प्रति भाव

पूज्य माँ का दृष्टिकोण सच ही विलक्षण था। सच ही परिस्थिति को देखने का उनका दृष्टिकोण जान कर ही पता चलता है कि -

हम ऐसे तुम ऐसे प्रभु जी!

यह घटना उस समय की है जब पूज्य माँ कॉलेज में पढ़ा करते थे। प्रातः प्रार्थना सभा में जब सब कहते, "Our Father..." तो पूज्य माँ चुप कर जाते। वह Christian College था। वहाँ पर Bible में से Hymns लेकर उस पर प्रार्थना हुआ करती थी। किसी ने देख कर कि पूज्य माँ प्रार्थना के समय चुप रहते हैं व प्रार्थना नहीं करते। इसकी शिकायत प्रिंसिपल को कर दी। जिसके परिणामस्वरूप कॉलेज की प्रिंसिपल ने पूज्य माँ को बुला कर इसका कारण पूछा। उन्हें शायद लगा होगा कि यह छात्रा अन्य धर्म की होने के कारण ऐसी प्रार्थना करना नहीं चाहती होगी।

पूज्य माँ ने जब उत्तर दिया तो प्रिंसिपल भी सुनकर अवाक् रह गईं क्योंकि एक नवयुवती से ऐसी सूझ के उत्तर की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। पूज्य माँ कहने लगे, "मैं भगवान को अपना पिता कैसे कह सकती हूँ? क्योंकि मैं तो उनकी योग्य बेटी ही नहीं हूँ। इतना गुमान कहाँ से लाऊँ, जो अपने आप को उनकी बेटी कहने का अधिकार रखूँ?

उन्हें पिता कहते हुए मुझे तो लाज आती है। इसलिये मैं उन्हें अपना पिता नहीं कहती और लाज के मारे चुप कर जाती हूँ।"

जब प्रिंसीपल ने यह सुना तो वह दंग रह गईं। उन्होंने अवश्य ही अपने आंतर में पूज्य माँ की प्रशंसा की होगी। सच ही माँ, आप धन्य हैं!

युवावस्था का अनुभव

हमारे जीवन में हर परिस्थिति बारम्बार आती है व कई बार उससे कुछ संदेश भी मिलता है। वह कुछ पल के लिये तो याद रहता है तत्पश्चात् वह भूल जाता है। उसकी स्मृति नाममात्र भी नहीं रहती। परिस्थिति जब सम्मुख आई हुई होती है तो हम यह समझते हैं कि अब दोबारा यह भूल नहीं करेंगे। परन्तु जब परिस्थिति परदे से निकल जाती है तो हम उसे भूल कर वही ग़लती करनी फिर आरम्भ कर देते हैं।

परम पूज्य माँ (चित्र में दायीं ओर से प्रथम) अपने विद्यार्थी काल में

पूज्य माँ के श्री मुखारविन्द से जब कोई घटना सुनते तो उसका विचित्र ही ढंग होता। परिस्थिति एक बार आती है और अनुभव सहित संदेश देकर चली जाती है। परिणामस्वरूप उसकी छाप तक नहीं रहती। मानो, वह साधक को जगाने की विधि बन कर आती है और चली जाती है।

हम साधारणतया यह समझते हैं कि हम दूसरे इनसान को अपने दिल की बात बतलायेंगे और हमारी यह मान्यता है कि 'बतलाने के पश्चात् हमारा मन उस परिस्थिति के

प्रति शांत हो जायेगा'। इसी प्रकार का एक अनुभव पूज्य माँ के जीवनकाल में, जब वह लाहौर में थे, तो प्राप्त होता है।

परम पूज्य माँ (चित्र में दायीं ओर) अपनी सखी के साथ

एक बार उन्होंने अपनी एक सहेली को अपने दिल की बात बतलायी और यह समझा कि अब मेरा मन शांत हो जायेगा। बात बतलाने के पश्चात् वह द्रष्टा बन कर अपने मन को देखने लगे तो क्या देखा कि

- मन तो और अधिक बोलने लग पड़ा है!
- मन समझता है कि मैंने उसे सखा जान कर बात करी है। उसको मेरे साथ सहमत होना चाहिये!
- उसे मेरे साथ हमदर्दी दर्शानी चाहिये!
- उसे मुझे आशाजनक वाक् कहने चाहियें!
- उसे किसी प्रकार का मेरे प्रति कोई प्यार करने वाला कर्म दर्शाना चाहिये!

सांझ तक इसी प्रकार के अनेक भावों का तांता लग गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि पूज्य माँ ने देखा कि मन तो शांत होने के स्थान पर अशांत हो गया है। इस अनुभव के परिणामस्वरूप यह पता चला कि

- दूसरे को केवल वह ही समझ आती है जो वह समझना चाहता है।
- प्रत्येक का अपना मन, अपना अनुभव और अपनी ही समझ होती है।

तब मन को यही समझाया कि देख मन! यदि तू समझना चाहता है तो दूसरे की बात सुन सकता है परन्तु दूसरे से यह आशा रखना कि वह बात समझेगा, यह नहीं बनता। इसके पश्चात् कभी ऐसा प्रश्न ही नहीं उठा। ❖

...कौन चाह समिधा तेरी,
कौन अग्न यह देख ले!

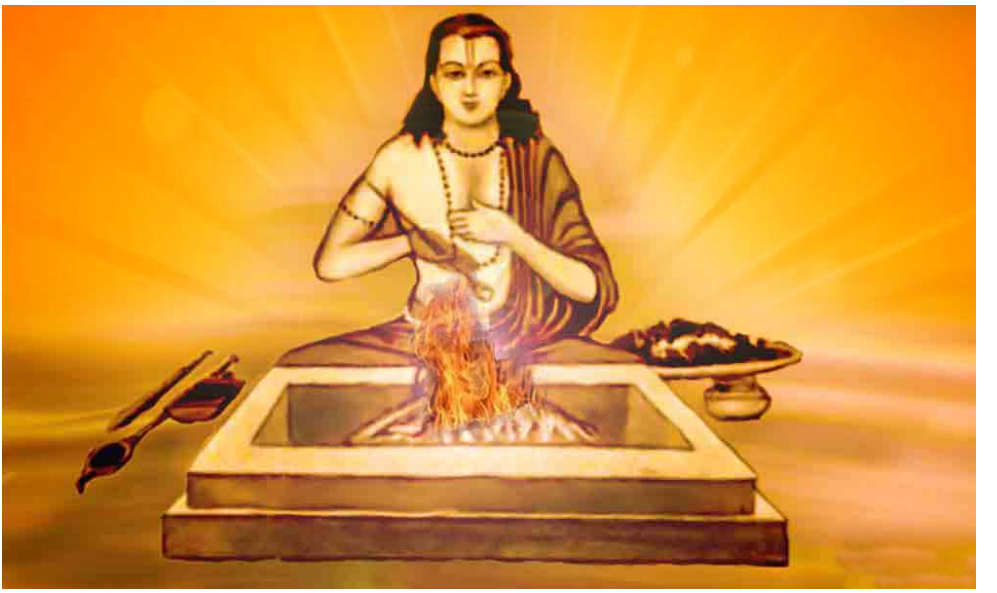

गतांक से आगे –

यदा लेलायते ह्यर्चः समिद्धे हव्यवाहने।
तदाज्यभागावन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेत्।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - द्वितीय खण्ड, २ श्लोक

शब्दार्थः

जिस समय हविष्य को देवताओं के पास पहुँचाने वाली अग्नि के प्रदीप्त हो जाने पर (उसमें) ज्वालाएँ लपलपाने लगती हैं; उस समय आज्यभाग की दोनों आहुतियों के स्थान को छोड़ कर बीच में अन्य आहुतियों को डालें।

तत्व विस्तारः

सर्वप्रथम अग्न होत्र का, वर्णन वह रे करते हैं।
कर्मफल चाह पूर्ति का, साधन सामने धरते हैं।।१।।

महा प्रज्वलित ज्वाला हो, समिधा तब ही डारिये।
सुख तभी तुझे मिले, आहुति निज बनी डारिये।।२।।

हवन कुण्ड के उत्तर दक्षिण, में रे घृत प्रथम डारा।
हवन आहुति को फिर जा, वा मध्य में रे डारा।।३।।

कर्म विधि रे कहते हैं, विधि अनुकूल चाहिये।
विधिवत् कर्म जो न हुआ, वाँछित फल न पाइये।।४।।

कर्म जिसे रे कहते हैं, निश्चित फल को जो करे।
विधिवत् गर रे वह नहीं, फल उपार्जित न होए।।५।।

महायत्न करना होगा, विधि में चित्त चाहिये।
विधि उल्लंघन न होये, सावधान हो जाइये।।६।।

अरे साधक रे ध्यान रहे, भाव उठान् न हो जाये।
अनजाने में भी तुमसे, अनर्थ वहाँ न हो जाये।।७।।

अर्द्ध प्रज्वलित अग्न में, आहुति कबहुँ न देना।
धूम्र दे गर वह रही, समिधा डार रे न देना।।८।।

कर्म से है यज्ञ श्रेष्ठ, इच्छित फल तो पावोगे।
जग वैभव जग महिमा, को तो तुम पा जावोगे।।९।।

फल उपलक्ष्य यज्ञ हो, देख विधि यहाँ कहते हैं।
अग्न होत्र रे कर्मन् का, फल कर्म भी यहाँ कहते हैं।।१०।।

किस विध अग्न होत्र रे हो, अग्नि किस विध उभर पड़े।
देख यहाँ पर कहते हैं, फिर किस विध रे तू पाये।।११।।

प्रज्वलित अग्न जब होये, विधिवत् पूजन उसका हो।
लालायित ज्वालन् में समिधा, पूजन रे बस उसका हो।।१२।।

प्रथम आहुति दे जो दी, उनकी देख रे कहते हैं।
मौन भाव से यह देव, पाछे की रे कहते हैं।।१३।।

उत्तर पूर्व में एक ही, दक्षिण पूर्व में दूजी दी।
अन्य आहुति सम्पूर्ण, ज्वालाओं के भीतर दी।।१४।।

अग्न रे गर प्रज्वलित न हो, प्रदीप्त यह न हो जाये।
धूम्ररहित जब लग न हो, एक ज्वाला न हो जाये।।१५।।

आहुति उसमें नहीं रे दो, देख यहाँ पे कहते हैं।
या कह दूँ भावन् देखो, संकेत में रे कहते हैं।।१६।।

अन्य समिधा सब रे जले, इच्छित फल को पाने को।
एको चाहना रह जाये, कर्मफल पाने को।।१७।।

भावन् में वह चाह भरी, समिधावत् सब डार दे।
अन्य भाव महाभाव में, पूर्ण ही जब डार दे।।१८।।

एक ओर अग्न जग हो, दूजी ओर अग्न सत् हो।
बीच में चाहना की चाह की, नित्य आहुति तुम रे दो।।१९।।

यथा इच्छित तू पायेगा, वह कर्म फल लायेगा।
पुण्य भावना गर रे हो, पुण्य ही फल आयेगा।।२०।।

सो अपनी साधना देख ले, अपनी भावना देख ले।
कौन चाह समिधा तेरी, कौन अग्न यह देख ले।।२१।।

यहाँ विधि रे कहते हैं, इच्छित फल पा जायेगा।
भाव हिय में धरी रे जो, यज्ञ करे सो पायेगा।।२२।।

वेदन् में बहु मन्त्र कहे, अनुकूल गर यज्ञ करे।
विधिवत् रे तू सम्पूर्ण, उन मन्त्रन् को नित्य करे।।२३।।

निश्चित फल पा जायेगा, जो चाहा जिस भाव में।
वह रे सामने आयेगा, जो चाहा जिस भाव में।।२४।।

अनुकूल ही पा जाये, यज्ञ सार यह कहते हैं।
वेदन् में जो मन्त्र कहें, यज्ञ आधार रे कहते हैं।।२५।।

अपरा प्राप्ति विधि है रे, बाह्य यज्ञ जो किया करे।
यज्ञन् में गर साधक रे, भाव रे भर दिया करे।।२६।।

महादीप्त वह भावना, अन्य भाव आहुति दे।
अन्य भाव जब राख हुये, इच्छित भाव रे रूप धरे।।२७।।

यज्ञ विधि यहाँ कहते हैं, इक निष्ठा तो हो जाये।
समस्त चाह का धूम्र जो, एक चाह में जल जाये।।२८।।

धूम्ररहित अरे जिस पल हो, अन्य भाव रे नहीं रहे।
स्वतः फल यह पायेगा, इक चाह बिन कोई न रहे।।२९।।

परम पूज्य माँ

- क्रमशः

२६-८-६१

मेरी शब से सहर और सहर से शब आप ही आप में गुज़र जाती!

श्रीमती पम्मी महता

'अर्पणा मन्दिर' का एक दृश्य

आप ही ने असीम अदब व प्यार से जीना सिखाया है, आप ही आप से जुड़ी रहूँ माँ सदा सदा के लिए; क्योंकि ज़िन्दगी को ज़िन्दगी से आप ही ने तो मिलाया है! यही सत्य है मेरे जीवन का, जो आप ही के आशीर्वाद से ही मैंने पाया है। क्या बताऊँ आपको माँ, मेरी शब से सहर और सहर से शब आप ही आप में गुज़रती है... इसके लिए आप श्री हरि माँ प्रभु जी का जितना भी धन्यवाद करूँ कम है।

जब भी मेरे दिल से आपके क़दमों की आहट गुज़रती है... किस क़दर आनन्दित करती हैं मेरे दिल से लिपट कर वह यादें, जिन्हें क़दम-ब-क़दम चल कर इस हृदय में संजो रखा है आपने! हे नाथ, यूँ ही सनाथ रखियेगा इसे तब तलक, जब तलक आपकी कृपा से यारब्ब आप ही की न हो जाऊँ!

मेरे जीवन का यह भी सत्य है कि आप ही ने इस जीवन को मक़सद दिया है। हर सुख दुःख में आप ही ने साथ दिया है। यही वजुहात है कि हर पल मुझे आप ही का प्यार

मिला है। आप ही का करम है माँ, जो आपने इसे क़बूल किया हुआ है। आपने ही जीवन के अनमोल मूल्यों से हृदय-दामन भरा हुआ है।

ज़िन्दगी आपके दिये दिव्य प्रसाद में ही ढलती जाये, जो आप ही आपके क़दमों में यह कनीज़ झुकी रहे। कैसे कैसे अद्‌भुत व विलक्षण नज़राने दिये हैं इस जीवन को आपने, जिन पर चल कर ही उनका मोल पा सकूँगी व आप ही आपके करम से आपका हर वक्त शुक्रिया अदा यूँ ही करती रहूँगी!

यह सत्य है कि मन्दिरों में आपकी मूर्त के आगे बहुत बार माथा टेका होगा मैंने! श्रद्धा से नमन भी दिया होगा... मगर आपके असीम अनुग्रहों की श्रृंखला में, आपके गंगावत् बहते प्यार में, आपके हर काज-कर्म में जब आपका साक्षात्कार हुआ तो आपको मन्दिर की मूर्त तो मान ही नहीं पाई।

आप तो मुझे चलते फिरते भगवान ही नज़री आने लगे। कैसे ठगी की ठगी रह जाती! आपकी सद्‌भावना, सद्‌व्यवहार व सदाचार को आपके प्रेम में बहते देखती... वहाँ तो न उद्‌गम नज़र आता और न ही अंत... बस हर हाल में, हर एक के लिये व उसी के तद्‌रूप होकर चलते ही चले जाते देखती तो देखती ही रह जाती!

मौन अनुभवों की गूँज जब हृदय में उठने लगी, तभी महसूस होने लगा आप इतने भिन्न है हमसे... हम हैं कि अपने को भूलते ही नहीं, एक आप हैं कि कहीं भी आपको अपनी याद ही नहीं! आपके जीवन की बड़ी ही विचित्र तुला थी। हैरतज़दा हो जाती और विचार उठता कि हमारी सोच में अपनी सोच बनी रहती है और दूसरी तरफ आप हैं जो दूसरे की ही सोचते हैं, दूसरे के लिये जीते हैं! बड़ा ही विलक्षण था आपका दृष्टिकोण... जिससे मैं किस क़दर आकर्षित हुई रहती! बहुत ही प्यारा व अच्छा अनुभव था मेरे लिये!

दिल दिमाग पे आपका कहा छा जाता। कितनी तहज़ीब थी आपके व्यक्तित्व की उस हर अदा में, जिसे निहारती तो निहारती ही चली जाती! कभी लगता माँ कि कितने विचित्र जगत के स्वामी हैं आप! मेरे हृदयपटल पर इतनी गहरी छाप छोड़ते आप कि आँखे मूंद कर उसका अवलोकन करती... जिस आपकी छवि ने मुझे लुभा रखा था! कितनी ख़ामोश होकर उसे उठा लेती क्योंकि आप स्वयं श्री हरि माँ प्रभु जी उसे उठवा रहे थे!!

दूसरी तरफ आप में मुझे महा कलाकार दिखाई देने लगा... जैसे पत्थरों को तराशते हुये कलाकार, आप भगवान को घड़ लेते हैं, उसी तरह आपने इस पत्थर हृदय को मोम बना कर तराशना क्या शुरु किया कि आंतर में धड़कनें सजीव हो उठीं! दूसरों के लिये दिल धड़कने लगा... आपके अनूठे प्यार की इस कारीगरी का करिश्मा देख कर हैरां भी हो जाती और यह भी महसूस करती कि जब तलक आप माँ प्रभु जी न दिखायें तो ऐसे दिव्य दर्शन कहाँ हो पाते हैं। अतीव विनीत व कृतज्ञ भाव से आपको मन ही मन

परम पूज्य माँ सहज में ही उच्चतम ज्ञान की गहराईयाँ भी उजागर किया करते...

नमन देते हुये सीस स्वतः ही श्री हरि चरणन् में झुक जाता। आप माँ प्रभु जी जब तलक न चाहें तो कौन जान सकता है आपको...

आपकी शुरुआत ही का यह मंज़र भी देखा कि आप कोई परदादारी रहने ही कहाँ देते हैं! आपने अपने और मेरे बीच में, जो कुछ भी था वह रहने ही नहीं दिया... जो खाईयाँ थीं, वह भी अपने प्यार और वात्सल्य से पाट दीं। जो हाट-बाज़ार 'मैं' की वृत्तियों का लगता था, उसकी जा पर साधू वृत्तियों की सभा लगने लगी! जहाँ राग-द्वेष, मोह-माया व अपने-पराये का हाट बाज़ार लगा रहता था आंतर में, इस कनीज़ को अपने में टिका कर कब कैसे कहाँ पीछे छोड़ आये कि मैंने तो इन्हें छूटते हुये भी नहीं देखा!

आपकी वाणी का परम सत्य सिद्ध हुआ कि 'उत्तरायण की ओर जब क़दम बढ़ने लगते हैं, तभी दक्षिणायन छूट जाता है पीछे!' आपके क़दमों ने ही इसका निरुपण करी, मेरे जीवन में इस सत्य की सार्थकता का ऐसा परिचय दिया कि इस आंतर में संत समागम होने लगा।

आप ही बताईये परम पूज्य श्री हरि माँ, क्या सद्गुरु की अहेतुकी कृपा बिन वहाँ पहुँचा जा सकता है? नहीं न! सद्गुरु का वेश धरी धरा पर अवतरित हो कर हे भगवन्, आप ही ने यह अद्भुत व दिव्य प्रसाद दिया... कहाँ 'मैं' के प्रयास से कुछ मिलता है! यह तो आप ही आपका हे श्री हरि माँ कृपा प्रसाद है, जो आप मानस की जात को स्वयं देने आते हैं अपने असीम अनुग्रह में लाकर! धन्य हैं आप श्री हरि माँ, आप धन्य हैं! आप ही की जय का सुमधुर स्वर मनोलोक में गूँजे, आप ही की महिमा हृदय से उठकर लबों से बह निकले!

आपकी कनीज़ मेरे रूबरू खड़े आप माँ भगवान जी का दीदार कर रही थी... जो मेरे आंतर के स्वामी बनने लगे थे। कैसा अद्‌भुत मंज़र था मेरे लिये... जहाँ से नज़र उठती ही नहीं थी! मन आतुर हुआ आप माँ प्रभु जी को निहारता ही जाता... इस दृश्य को आंतर में समेट कर यही दुआ करती कि यह आंतर में ही सदा सदा के लिये बसा रहे!

ऐसा लगने लगा माँ कि इस जिस्म और जान में व्याप्त होकर आपने मुझमें काया ले ली। आपके श्री चरणन् में मन ही मन लोटती जाती! कैसे आप प्रभु का धन्यवाद करूँ? करी करी कहाँ कर पाती थी... आपने इस ग़रीब को अपनी नेमतों के साथ स्वयं को इस हृदय में बसा लिया। मुझ नसीबन को यह नसीब आप ही ने कृपा प्रसाद रूप दिये... बारम्बार आपको नमस्कार करती व करती ही जाती हूँ निरन्तर ही! हे जीवनदायनी, करुणादायनी, आप श्री हरि जगद् जननी माँ को पाकर यह आपकी बेटी धन्य धन्य हो गई! सच, कृपा के सागर जब गंगावत् बहने लगते हैं तभी आपका प्रेम सभी रूपों में आ आंतर को धो कर स्वच्छ व निर्मल कर देता है!

हे अमृत-रस बरसाने वाली माँ, आपका चरणामृत का सोपान करी यह काली कैसे धन्य धन्य होती गई... जिस पर आप माँ प्रभु जी की मेहर हो व जिन पर करम हो, वहाँ कुछ भी तो नहीं बचा कर रखते... कुछ भी नहीं!! यूँ ही आप के शाश्वत सत्य के मुझे भव्य व दिव्य दर्शन मिले। ऐसे आत्मीय व योगेश्वर के आगे सीस क्या झुका, फिर उठा ही नहीं। आप योग-साधना को स्वयं ही सिद्ध करते हैं। कैसे पूर्ण मिलन के लिए आप अपनी पूर्ण की पूर्णता में रफ़्ता-रफ़्ता उतारते चले जा रहे हैं।

अपनी कनीज़ के लिये असाध्य को स्वयं साध्य बना रहे हैं... जो जीव जगत एक क़दम नहीं चल पाता आपके बिना, उसी के कल्याण पथ को खोलने आप श्री हरि माँ प्रभु जी हर युग में आते हैं। हमारी अंधी बुद्धि इस परम सत्य के प्रति पूर्णतया अर्पित व समर्पित होकर, आपको सच्चे व सुच्चे हृदय से, असीम प्यार व भक्ति भाव से तथा श्रद्धा से कहाँ स्वीकार कर पाती है... यही है हम मानस की जात की विडंबना!

हे नाथ, आप ही से सनाथ हुये रहें। इसी की याचना के लिए हमें प्रेरित किये रहिये! हे श्री हरि माँ, आप ही से हमारे आंतर पूर्णतया आप ही में व आपकी ज्योत्सना में जागृत हो जायें! इसी प्रेम व आदर भाव को आपके प्रति हृदय में उठाये रखिये जो आपके प्रति समर्पित हो जायें! मन की आँखे खोल दीजिये जो आपके दर्शनों में आपकी हर देन का हमें एहसास हो जाये और कृतज्ञ भाव से अपने समेत आपना सभी कुछ आपके अधीन करी आप ही के हुक्म में रह पाने की असीस आपसे पा जायें। - आमीन!

इसके हृदय को आप ही ने, हे श्री हरि माँ, सभी के लिये धड़काया है - इसी लिये बारबार आप विश्व विधाता के आगे नतश्री होते हुये आप ही से प्रार्थना को यह मन अधीर हो जाता है... क़बूल लीजिये हे श्री हरि नाथ इसकी प्रार्थना, जो हम सभी मिल कर सत्य में आ जायें! अज्ञानता अपनी से निकल, आपकी ज्योत्सना में आ जायें!

हे श्री हरि माँ प्रभु जी, दिवाली आने वाली है! हम सभी के आंतर के द्वार खुल जायें जो हम सभी सच ही अपने हृदयों में आपका स्वागत कर पायें। आप ही के आशीर्वादों से, आपकी ज्योत्सना में ऐसे उतरें कि फिर पीछे मुड़-मुड़ कर न देखें!

'ज्योत जले महाज्ञान की, राम की यह ज्योति है।
संग मिटाव की ज्योति यह, राम की यह ज्योति है।।'

आप गये कहाँ हैं माँ...? बस हम ही हैं जो आपको देख कर, अपने अंग संग पाकर भी आपकी असीम करुण-कृपा पाकर भी तथा आपके दिव्य व विलक्षण दर्शन पाकर भी आप ही से महरूम हैं! आखिर क्यों माँ? हमें इतना तड़पा दें कि केवल आपको मिलने की तड़प ही हमारे आंतरों में रह जाये! इस युग की कालिमा का जो प्रभाव जाता ही नहीं हमारे आंतर मनों से, वहाँ कृपा करी अपनी ही रोशनाई भर दीजिये!

कृपा कीजिये माँ, आप कृपा कीजिये! आपके स्वागत के लिए हृदय-पट खुल जायें और हम समर्पित व अर्पित भाव से आपके श्री चरणन् में आ जायें। ऐसी ही दिवाली मनाने का हमें परम सौभाग्य दीजिये प्रभु जी!

हमें प्रेरित कीजिये, जो हमारी दिवाली भी शुभ व मंगलमय हो जाये! हम आपके आगमन का स्वागत करने के लिये मंगलगीत गाते हुये व दैवी सम्पदा का श्रृंगार करी आपकी चरण-रज लेते हुये, आप ही को तिलक करें! आप ही आप हमारे हृदयों में, हमारे कर्मों में, हमारी सद्भावनाओं में, हमारे निःस्वार्थ व निष्काम भाव में व्याप्त हो कर ही हे नाथ, आप ही आप विजयी हों! आप ही आपकी जय की गूँज हृदय आकाश में हो!

जिन्हें हम मुहब्बत का नाम देकर इबादत के लिये हाथ उठा लेते हैं, उन्हें ही सिजदे में धर कर सिजदा दे सकें! हे माँ, ऐसे ही कर पायें! हम मानस की जात का कल्याण इसी में है। हे महामानव, हे योगेश्वर, हे श्री हरि जगद् जननी माँ, स्वयं को इन हृदयों में प्रतिष्ठित होने दीजिये। कृपा कीजिये हे करुणाकर, हम मानस की जात पर करुण-कृपा अपनी होने दीजिये जो हम सभी में करुणा, दया, क्षमा के कोष खुल जायें... जो युगों से अवरुद्ध पड़े हैं!

इस कनीज़ की आरत पुकार को सुन लीजिये हे श्री हरि माँ, आप सुन लेंगे न माँ... यह करबद्ध प्रार्थना अवश्य क़बूल लीजियेगा! हमारे हृदय इस योग्य हो जायें जो भारतभूमि पर अवतरित हुये हैं श्री हरि माँ प्रभु जी, वही हृदयों में अवतरित हो जायें जो फिर कभी रुख़स्त न हों! - आमीन!

ॐ हरि ॐ ❖

अपना नाम ही नहीं रहे,
जो रहे वह समर्पण है!

अर्पणा प्रकाशन - 'प्रज्ञा प्रतिभा' में से

अहं चरण मिटाव जान, समर्पण इसे ही कहते हैं।
अपनी चाहना नहीं रहे, अर्पण इसको कहते हैं।।१।।

विकल्प रहित मनोलगाव, किसी चरण में जब होये।
श्रद्धापूर्ण हृदय भये, समर्पण मन का तब होये।।२।।

मनोविश्वास मनोआस, प्रेमास्पद ही रह जाये।
अपनी अहं ही नहीं रहे, बस उसकी ही रह जाये।।३।।

चरणन् में अहं मिटाव, जान मना समर्पण है।
अपना नाम ही नहीं रहे, जो रहे वह समर्पण है।।४।।

हर काज क्रिया सों अहं मिटे, इसको कहें समर्पण है।
अहं नितान्त अभाव को, कहें परम यह अर्पण है।।५।।

मनोप्रवाह सों संग मिटे, कर्तृत्व भाव भी नहीं रहे।
सूक्ष्म मन स्थूल रूप, में अहं जो नहीं रहे।।६।।

यह अहं निवृत्ति ही जानो, समर्पण ही तो होती है।
रेखा प्रवाह स्वीकृति, अहं समर्पण होती है।।७।।

प्रयोजन रहे राम का, योजन अपना नहीं रहे।
राम यन्त्र तन मन भये, चाहना अपनी नहीं रहे।।८।।

हर कर्म राम चाह जान करी, सीस निरन्तर झुका रहे।
समर्पण पूर्ण हो जाये, जब सीस ही अपना नहीं रहे।।९।।

नमो कहा फिर नमन किया, अस्तित्व अपना कहाँ रहे।
चाह लग्न मम संग गये, समझो अर्पित हो गये।।१०।।

हरि इच्छा ही तन भया, हरि इच्छा परिस्थिति भये।
हरि इच्छा हो कर्म धर्म, हरि इच्छा हर स्थिति भये।।११।।

समर्पण इसी को कहते हैं, सब उसका ही हो जाये।
वा चरण में सब तजी, मन उसी में खो जाये।।१२।।

अपना पराया कहाँ रहे, सब राम राम ही हो जाये।
प्रज्ञा चरण में बुद्धि झुके, बुद्धि में मन खो जाये।।१३।।

क्या हुआ यह क्यों हुआ, राम यह कब होयेगा।
राम ऐसा हो जाये, भाव यह तब नहीं होयेगा।।१४।।

श्रद्धा के ही आसरे, समर्पण यह ही होता है।
प्रेमास्पद के चरणन् में, ही मन अर्पित होता है।।१५।।

निर्बल का बल जान मना, समर्पण ही तो होता है।
बलवान का शक्ति रूप भी, बस यही तो होता है।।१६।।

साधक का बल समर्पण है, प्रेम का नाम ही अर्पण है।
चाह मिटाव समर्पण है, अहं मिटाव समर्पण है।।१७।।

संस्कार प्रवाह जो बहे, अनुरूप यह तन उभरे।
अन्तःकरण ही जन्म ले, परिस्थिति भी संग उभरे।।१८।।

समर्पण जिस पल हो जाये, तन सों नहीं वह संग करे।
रेखा बँधा सब हुआ करे, मन नहीं वहाँ रंग भरे।।१९।।

चाह लग्न मोह ममता का, रंग यह मन ही भरता है।
याद रहे राम चरण में, भी यह मन ही धरता है।।२०।।

समर्पित मन ही करता है, और अर्पित मन ही होता है।
साधक मन ही होता है, और राम में मन ही खोता है।।२१।।

कोई इसे वैराग्य कहे, वैराग्य समर्पण होता है।
कोई इसको त्याग कहे, त्याग समर्पण होता है।।२२।।

स्थूल रूप सों संग मिटे, त्याग इसे ही कहते हैं।
राम चरण में सब धरे, समर्पण इसको कहते हैं।।२३।।

जब लग कहो तूने छोड़ दिया, कहो त्याग तुम करते हो।
नाम लिया और छूट गया, कहें चरण में धरते हो।।२४।।

अपना नाम ही नहीं रहे, उसका नाम ही रह जाये।
समर्पित चरण में हो जाये, अपना नहीं कोई कह पाये।।२५।।

जो कहे अर्पित हो जाये, उसको नहीं फिर याद रहे।
वह तो राम में खो जाये, उसको क्योंकर याद रहे।।२६।।

मान्यता अपनी नहीं रहे, हर स्वास उसी का हो जाये।
अस्तित्व अपना क्या रहे, अहं जो अर्पित हो जाये।।२७।।

अहं चढ़ाव समर्पण है, तनो चढ़ाव समर्पण है।
मन मिटाव समर्पण है, बुद्धि चढ़ाव समर्पण है।।२८।।

जो होये सो हुआ करे, संग वहाँ फिर नहीं रहे।
परम मिलन की परम राह, पे हैं साधक जा रहे।।२९।।

मनोमौन समर्पण है, चाह मिटे यह मौन भये।
राग द्वेष ही कहाँ रहे, चाहुक मन जो न रहे।।३०।।

परिस्थिति फिर जो भी हो, परिवर्तन वह न चाहे।
अपनी चाहना ही नहीं, जो होये होता जाये।।३१।।

हर परिस्थिति उस साधक की, साधन सामग्री हो जाये।
नाम तो वह नित्य ही ले, चरणन् में मन खो जाये।।३२।।

मनोस्तर पे जान मना, नित्य साधना होती है।
समर्पण जो है कर रहा, दृष्टि मन पे होती है।।३३।।

जो भी हो उसे देख करी, मनोमौन वह चाहे है।
प्रतिकार झंकार जो उठे, मौन ही करता जाये है।।३४।।

परिस्थिति जैसी भी हो, समर्पित गर है हो चुका।
निरपेक्ष वह निरखा करे, गर अर्पित है हो चुका।।३५।।

मनोवासी वह हो जाये, साधन नगरी मन भये।
मनोनगरी सों स्वतः उठे, बुद्धि वासी हो जाये।।३६।।

हर क्रिया हर भाव प्रवाह, साधना ही हो जाये है।
जिस पल राम चरण में वह, अर्पित मन हो जाये है।।३७।।

मनोमान्यता नहीं रहे, मन राम का हो जाये है।
जिसके चरण में मन मिटे, मन उसका हो जाये है।।३८।।

यह भी नहीं फिर याद रहे, किसका क्योंकर हो जाये।
आप मिटा और अहं गया, बाक़ी सब उसका हो जाये।।३९।।

समर्पण वस्तु त्याग नहीं, भाव त्याग समर्पण है।
भाव त्याग की बात नहीं, संग मिटाव समर्पण है।।४०।।

स्थूल त्याग ही नहीं नहीं, सूक्ष्म त्याग समर्पण है।
सूक्ष्म की ही बात नहीं, कारण त्याग समर्पण है।।४१।।

संस्कार भी स्वतः बहें, वहाँ भी संग वह न करे।
तनोप्रवाह देखा करे, अहं कहीं भी नहीं भरे।।४२।।

तद्रूप होना छोड़ दे, समर्पित तब वह हो चुके।
तन मन जहान सों उठे, जग परे वह हो चुके।।४३।।

संग कहीं पे नहीं रहा, प्रेमास्पद का तन भये।
किसको अपना मन कहे, राम का ही मन भये।।४४।।

बुद्धि को वह क्या करे, निर्णय अब वह नाहिं ले।
अपनी बुद्धि चरण धरे, वा निर्णय यह सीस धरे।।४५।।

भाव प्रवाह उसका हुआ, वह भी अपना नहीं रहा।
जिसको अपना कहता था, कुछ भी अपना नहीं रहा।।४६।।

समर्पण गर तुम पूछो मन, मनोमिटाव समर्पण है।
अहंकार राह तू पूछे है, जान ले क्या समर्पण है।।४७।।

गर कहे समर्पित ही तू, अब मन होना चाहे है।
जान ले तू मन मेरे, चिता अपनी बनाये है।।४८।।

मनोवृत्ति यह अहं कृति, मशाल ले के आये है।
समर्पण तब ही हो सके, मन जो मिट ही जाये है।।४९।।

उदासीन निरपेक्ष भये, समत्व में स्थित होये वह।
चाहना संग मम सबसे, पल में निवृत होये वह।।५०।।

समर्पण उसको कहते हैं, अहं अर्पित होये जब।
राम चरण ही रह जायें, मन अर्पित होये जब।।५१।।

परम पूज्य माँ

२५-१-१९६२

❖ ❖ ❖

ज्ञान को अक्षरशः मान लिया तो वह स्वतः जीवन में उतर ही आयेगा!

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्।।

श्रीमद्भगवद्गीता ५/४

भगवान कहते हैं, हे अर्जुन!

शब्दार्थ :

१. सांख्य को और योग को बालक ही अलग अलग कहते हैं, पण्डितगण नहीं।

२. एक में भी अच्छी तरह स्थित हुआ,

३. दोनों के फल को पा लेता है।

तत्व विस्तार :

'ज्ञान और योग', को ध्यान से समझ

नन्हीं!

ज्ञान और योग एक ही बात है। योग के बिना ज्ञान निष्प्राण रह जाता है और क्रिया कर्म के बिना योग तनरहित रह जाता है।

गर ज्ञान स्वरूप है तो योग स्वभाव है और यज्ञ इनका सहज परिणाम है। ज्ञान की बात करो, तो भी मनोमल मंजित कर, जीवन में प्रमाण आवश्यक है। योग की बात भी करो, तो भी मनोमल मंजित कर जीवन में प्रमाण देना अनिवार्य है।

क) जीवन दोनों का समान होता है।
ख) परिणाम दोनों का समान होता है।
ग) कर्म विधि दोनों की समान होती है।
घ) ज्ञान दोनों में समान होता है।
ङ) शब्दज्ञान योग द्वारा विज्ञान बनता है।

योग :

१. प्रेम का दूसरा नाम योग है।
२. महाभक्ति यह ही है।
३. श्रद्धा इसी का नाम है।
४. परम अनुरक्ति इसी को कहते हैं।
५. अतिशय प्रिय, सतमय स्वरूप में एकता ही योग है। जीवन में प्रेमास्पद का रूप बनना हो, तो उसमें भक्ति उत्पन्न करने वाला योग ही है।
६. जब जीवन में नाम का आसरा होता है, तब योग होने लगता है।
७. नामी के चरण में जब साधक अपना सर्वस्व धरता है तब वह निष्काम कर्मयोग की सीढ़ी चढ़ता है।
८. जब साक्षी नित्य नामी हो तब ही आत्मा से योग हो सकता है; तब जीवन यज्ञमय हो जायेगा। तत्पश्चात् ज्ञान उपजता है और फिर परम स्थिति होती है। सांख्य में गर श्रद्धा नहीं तो ज्ञान केवल शब्दमात्र है।
९. सांख्य गर जीवन में न आया तो केवल शब्दमात्र ही रह जायेगा।

परम ज्ञान में प्रेमरूपा श्रद्धा ही योग दिला सकती है तत्पश्चात् वह जीवन में उतर ही आयेगा। सांख्य ज्ञानी, स्वरूप स्थिति तब ही पायेगा जब आत्मवान हो जायेगा।

सांख्य :

नन्हीं! सांख्य आत्म का ज्ञान है। सांख्य में आत्मा और जीवात्मा को एक मानते हैं और पूर्ण सृष्टि को त्रिगुणात्मिका शक्ति से रचित तथा त्रैगुणपूर्ण मानते हैं।

योग :

योग तब होता है जब जीव जीवत्व भाव छोड़कर अपनी आत्मा में स्थित हो जाता है

संन्यास :

संन्यास तब होता है जब जीव अपने ही तन से मुखड़ा मोड़ लेता है और अपने को आत्मा मानने लगता है। नन्हीं! यदि योगी होना है तो अपने ही तन से वियोग होना अनिवार्य है। जब साधक अपने को आत्मा मानने लगता है तो संन्यास हो ही जाता है।

क) यदि संन्यास हो ही गया तो योग हो ही जायेगा।
ख) जब योग हो ही गया तो तू आत्मवान बन ही जायेगा।
ग) जब आत्मवान बन गया तो तन तथा तनोकर्म तुम्हारे नहीं रहेंगे।

जो यह सब जानता है, वह जानता है कि दोनों का फल एक है। वह योग और संन्यास की अभेदता को जानता है।

सांख्य और ज्ञान :

देख नन्हीं! सांख्य भी आत्मा का ज्ञान देकर जीवात्मा को आत्मा के साथ एक होने के लिये कहता है; योग उसी आत्मा से एक कर देता है।

नन्हीं! इस बात का ध्यान रहे, सांख्य ज्ञान है। जो वह कहता है, योग उसी से मिलन का नाम है।

सांख्य परम का ज्ञान है जो आत्मा और परमात्मा को एक करता है। योग परम मिलन को कहते हैं जब आत्मा परमात्मा एक हो जाते हैं।

नन्हीं! यदि तूने ज्ञान को अक्षरशः मान लिया तो वह स्वतः तुम्हारे जीवन में उतर ही आयेगा, यदि तुम योगरूप मिलन को अक्षरशः मान लो तो भी तुम परिणाम में आत्म तत्व में स्थित हो ही जाओगी।

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।।५।।

श्रीमद्भगवद्गीता ५/५

भगवान फिर से सांख्य और योग की एकरूपता का निरूपण करते हुए कहते हैं कि :

शब्दार्थ :

१. सांख्य द्वारा जो स्थान प्राप्त होता है;
२. योग भी वही प्राप्त करता है;
३. जो पुरुष सांख्य और योग को एक देखता है, वही (यथार्थ) देखता है।

तत्व विस्तार :

नन्हीं आत्मा! भगवान फिर से सांख्य और योग का एकत्व सुझा रहे हैं। इस एकत्व को जो जीव जानता है, वह ही यथार्थ सत्य समझता है।

सांख्य और योग को पुनः समझ ले :

सांख्य	**योग**
१. परम तत्व विवेक है।	१. परम तत्व में एकरूप होना है।
२. आत्मा और परमात्मा में एकत्व का निरुपण है।	२. आत्मा और परमात्मा का एकरूप हो जाना है।
३. आत्मा के नित्य साक्षी होने का ज्ञान है।	३. उस सांख्यकथित तत्व को मान लेना योग है।
४. आत्मा के अकर्ता भाव का विवेक सांख्य है।	४. अपने आपको अकर्ता मान लेना और कर्तृत्व भाव को छोड़ देना योग है।
५. आत्मा के अभोक्ता भाव का विवेक सांख्य है।	५. अपने आपको अभोक्ता मान लेना योग है।
६. पूर्ण सृष्टि गुणों के सहयोग और मिलन से उत्पन्न होती है, यह सांख्य कहता है।	६. इस तत्व को मान लेने का नाम योग है।
७. सांख्य आत्मज्ञान है।	७. योग आत्मवान बनाता है।
८. सांख्य आत्मज्ञान विवेक है।	८. योग आत्मवान का प्रमाण है।

सांख्य	योग
९. सांख्य जड़ व आत्मा को पृथक् कर देता है।	९. योग जीवात्मा का जड़ से वियोग करवा कर आत्मा से मिलन करवाता है।
१०.सांख्य शुष्क ज्ञान है।	१०.सांख्य प्रतिपादित ज्ञान से प्रेम रूपा मिलन ही योग है।
११.सांख्य जड़ और चेतन के इतने पुराने संयोग को तोड़ देता है।	११.योग उस टूटे हुए सम्बन्ध से उठाकर जीवात्मा को परम में ठौर देता है और आत्मा तथा जीवात्मा का संगम करवा देता है।
१२.सांख्य अभिन्नता स्पष्ट करता है।	१२.योग अभिन्न का पुनर्मिलन करता है।
१३.सांख्य स्वरूप की कहता है।	१३.योग परम स्वरूप बना देता है।
१४.सांख्य आत्मा तथा परमात्मा के एक होने का और सृष्टि के जड़ होने का ज्ञान है।	१४.योगस्थित आत्मा में स्थित होता है और सृष्टि की जड़ता से नित्य अप्रभावित रहने का प्रमाण है।

नन्हीं!

क) सांख्य में स्थिति का नाम ही योग है।

ख) सांख्यस्थित जानते हैं कि प्रकृति के प्रति समभाव, समदृष्टि ही होनी चाहिये; और योगी समभाव, समदृष्टि ही हैं।

ग) सांख्य में योग हो जाये, तो आत्मवान का प्रमाण मिलता है।

घ) सांख्य को यदि ब्रह्म का ज्ञान कहें तो योग उसका स्वभाव है और प्रकृति उसका जीवन है।

ङ) सांख्य स्वरूप है, योग मौन है, प्रकृति रूप है और यज्ञ स्वरूप है।

च) कहना है तो यूँ कह लो, आत्मा मौन यज्ञ स्वरूप है। सांख्य राही जो ज्ञान पाया वह आपको आत्मा में स्थित होने को कहता है। आत्मा में स्थित होकर जीवन आत्मवान के समान होना चाहिये। आत्मा से योग हो जायेगा, तब आपका जीवन आत्मवान के चिन्हों से भरपूर होगा। तब आप शाश्वत अध्यात्म प्रकाश स्वरूप के स्वयं रूप होंगे।

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति।।

श्रीमद्भगवद्गीता ५/६

भगवान कहने लगे :

शब्दार्थ :

१. किन्तु हे अर्जुन! योग के बिना संन्यास प्राप्त होना अति कठिन है।

२. **योग युक्त हुए, मुनि लोग, शीघ्र ही ब्रह्म को पा लेते हैं।**

तत्व विस्तार :

अब भगवान कहते हैं :

१. योग के बिना ब्रह्म को पाना अतीव कठिन है।
२. योग के बिना ब्रह्म को पाना असम्भव ही है। अधिकांश साधकगण के लिये आत्मवान बनना अतीव कठिन है।

केवल ज्ञान पर ध्यान लगा कर समत्व स्थिति पाना, निर्द्वन्द्व होना, तन से उठना, कर्तृत्व भाव अभाव, भोक्तृत्व भाव मिटाना, मान-अपमान से उठ जाना, संग, मम, मोह का त्याग, अहं मिटाना तथा कामना त्याग भी असम्भव है, अतीव कठिन है। इसलिये, बिना योग के संन्यास पाना मुश्किल है।

लाखों में कोई एक होगा, जो आत्म तत्व को शायद पा सके।

क) जो अतीव सूक्ष्म बुद्धि वाला हो।
ख) जो अपने आन्तर में मन के उद्‌गम स्थान को देख सके।
ग) जिसकी बुद्धि इतनी चतुर तथा दक्ष हो कि अपने मन को उसकी ग़लतियाँ बता सके।
घ) जो अपने आपको नित्य न्याय की कसौटी पर, निरपेक्षता से न्याय करते हुए मुजरिम ठहरा सके।
ङ) जिसकी बुद्धि, अपने ही चेत, अर्धचेत तथा अचेत चित्त की ग्रन्थियों को देख सके और इनको तोड़ सके।
च) जिसकी बुद्धि अपनी ही मान्यताओं के प्रति उदासीन हो सके उनसे आवृत न हो जाये।
छ) जिसकी बुद्धि अपने प्रति नित्य मौन रहे।
ज) जिसकी बुद्धि अपने प्रति नित्य उदासीन रहे।

मेरी नन्हीं आत्मा! जिसके पास ऐसी बुद्धि होने का गुमान हो वह शायद ही इसे पा सके। नन्हीं! ख़ुद सोच ले, जिसके पास इतना अहंकार होगा, वह क्या पा सकेगा? जो अपने आपको पहले ही स्थितप्रज्ञ समझता है, वह कुछ नहीं समझ सकेगा। इस कारण भगवान कहते हैं कि योग का उन्होंने जो तरीक़ा बताया है, यह आसान भी है और शीघ्र फल देने वाला है।

यानि :

१. निष्काम भाव से कर्म करो;
२. निरासक्त होकर कर्म करो;
३. अपने आपको भूलकर और लोगों के तद्‌रूप होकर, उनके योजन सफल बनाने के यत्न करो;
४. साधारण जीवन में कर्तव्यपरायण हो कर कर्म करो;
५. यज्ञमय जीवन बनाओ;
६. तुम आत्मा हो तन नहीं हो, तन औरों के काज अर्थ दान में दे दो;
७. परिणाम में जो मिले, उसे प्रसन्नता से ग्रहण करो और यज्ञशेष का भक्षण करो।

मुनिजन ने भी यही किया। वह योगयुक्त होकर ही जल्दी ब्रह्म को पाते हैं। नन्हीं! यही सुगम, सुख तथा नित्य प्रसन्नता देने वाला पथ है। इस राह से जीव शीघ्र ही आत्मवान हो सकता है। ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
२६ अगस्त २०१७

अर्पणा समाचार

अर्पणा के सांस्कृतिक विभाग में नई ऊर्जा

अर्पणा के संगीत और नाटक प्रभाग में श्रीमती निरिति वैद की मानद निर्देशक के रूप में नियुक्ति के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में नई ऊर्जा का संचार किया गया। करनाल में समान विचारधारा वाले व्यक्तियों और समूहों का सहयोग प्राप्त करके, परम पूज्य माँ द्वारा बताई गई हमारे प्राचीनकाल के संतों के जीवन की कहानियों के नाट्यकीय रूपांतरण को पेश किया जा सकेगा। उनका दिव्य जीवन, उनके मानवीय गुण हमें अपने जीवन में उन सुन्दर गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित करते हैं।

रामायण में एक बहुत ही प्रसिद्ध प्रसंग - 'शबरी' की कहानी है, जिसे कई वर्ष पूर्व परम पूज्य माँ ने भक्तिपूर्ण भाव से बच्चों को सुनाया। इसका नाट्य रूपांतरण २६ व २७ अगस्त २०१७ को, सेंट थेरेसा कॉनवेंट स्कूल, करनाल के सभागार में अर्पणा दिवस के उपलक्ष्य में प्रस्तुत किया जा रहा है।

डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली में गीता अध्ययन सत्र

ई-२२, डिफेंस कॉलोनी के मन्दिर में हर बुधवार की सुबह 'श्रीमद्भगवद्गीता' में रुचि रखने वाले कुछ लोग एकत्रित होते हैं जहाँ परम पूज्य माँ द्वारा किये गये 'श्रीमद्भगवद्गीता' के व्यापक विस्तार का अध्ययन किया जाता है।

सर्वप्रथम साधकों के प्रश्नों के परम पूज्य माँ द्वारा दिय गये उच्चतम ज्ञानवर्धक उत्तरों का वीडियो देखा जाता है। उसके पश्चात् गीता के श्लोक के विषय में चर्चा की जाती है जहाँ वे सब अपनी अपनी समझ के अनुसार विचारविमर्श करते हैं। इस प्रकार के जीवंत वार्तालाप से आनन्दमय वातावरण बन जाता है।

इन अध्ययन सत्रों में जो भी चाहें शामिल हो सकते हैं।

दिल्ली के कार्यक्रम

अर्पणा छात्रों को बधाई

७ जुलाई २०१७ को अर्पणा केन्द्र मोलरबन्द में सीबीएसई के ट्युशन कक्षा के छात्रों के परीक्षा परिणाम में उनकी उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए अर्पणा द्वारा एक समारोह आयोजित किया गया।

३४ छात्रों में से २९ छात्रों ने सीबीएसई की १२वीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी के अंकों के साथ पास की। पूर्व-स्कूल और प्राथमिक विद्यालयों के लिए कई वर्षों से अर्पणा के कार्यक्रमों में सहयोग दे रहे, अवीवा प्राइवेट लिमिटेड से आये, मुख्य अतिथि, श्री विवेक सक्सेना, सीएफओ, ने छात्रों को पुरस्कार दिये एवं प्रत्येक को बधाई दी।

अर्पणा के सबसे ऊँचे अंक प्राप्त करने वाले छात्र बंटी ने, अपनी शैक्षिक विफलताओं के बारे में बताया और कैसे उन्हें अर्पणा के समर्पित शिक्षकों एवं स्वयं सहायकों से प्रेरणा मिली, जिससे वे सफलता प्राप्त कर सके। अन्य छात्रों को भी शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए विशेष पुरस्कार दिये गये।

शिक्षकों को भी सफलतापूर्ण शिक्षण के लिए पुरस्कार प्रदान किये गये जिन्हें डॉ. लीना गुप्ता द्वारा वितरित किया गया।

अर्पणा द्वारा चलाये गये वंचित बच्चों के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों में सहयोग देने के लिए एस्सेल फाउंडेशन अवीवा प्राइवेट लिमिटेड और केयरिंग हैण्ड फॉर चिल्ड्रन का अतीव आभारी है।

मनमोहक नृत्य

बालवाटिका से छोटी छात्राओं ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया जबकि बड़ी छात्राओं ने उत्साहपूर्वक मनोहर नृत्य किया।

एनआईआईटी - सीसीआईबी

४ अप्रैल को, १८ छात्रों का एनआईआईटी फाउंडेशन की ओर से एक परीक्षक द्वारा मूल्यांकन परीक्षण किया गया। श्रीमती सुषमा सेठ ने सभी को प्रमाण-पत्र वितरित किये।

वंचित छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति

वंसत विहार में अर्पणा केन्द्र की लड़कियों की सहायता करने के लिए डबल्यूएचओ (WHO) की पूर्व निर्देशक श्रीमती माला पाल ने उदार धनराशि से एक छात्रवृत्ति की शुरुआत की, जिससे वे अपनी माताओं की तरह घरेलू नौकरियाँ न करें बल्कि कैरियर उन्मुख महिलाएं बनें। इस प्रकार वे अपने पैरों पर खड़े रहते हुए गर्व और गरिमा का जीवन जीने में सक्षम हो सकेंगी।

अर्पणा कम्यूनिटी कल्याण केन्द्र ने एक छात्रवृत्ति की शुरुआत की है जिससे स्थानीय सरकारी स्कूल की ९वीं से १२वीं कक्षा की लड़कियों को प्रतिमाह १०००/- रुपये दिये जायेंगे।

शिक्षा निधि की आवश्यकता समझने वाले सभी लोगों का, विशेषकर श्रीमती माला पाल एवं अल्फ़ा चैरिटेबल ट्रस्ट, केरल के श्री के एम नूरदीन का हार्दिक धन्यवाद!

अर्पणा अस्पताल

मधुमेह रेटिनोपैथी व ग्लूकोमा शिविर

१ मई को, अर्पणा अस्पताल द्वारा घरौंडा में एक मधुमेह रेटिनोपैथी के शिविर का आयोजन किया गया, जहाँ १५४ मरीजों में से २४ मरीज़ों को ऑपरेशन की आवश्यकता थी। ४ ग्लूकोमा शिविरों का समालखा, मुस्तफाबाद, दखवाला गुजरां और अंधेदा दिलवारा में आयोजन किया गया। ३५९ रोगियों में से ४६ को ऑपरेशन की आवश्यकता थी। इन्हें निःशुल्क अथवा सब्सिडी युक्त किया गया।

घरौंडा की १८ वर्षीय अंग्रेजो पिछले कई वर्षों से मोतियाबिन्द से पीड़ित थी। अर्पणा अस्पताल में निःशुल्क ऑपरेशन द्वारा उसे राहत प्रदान की गई।

हरियाणा ग्रामीण विकास

मौसमी रोगों की रोकथाम

जून में मौसमी रोगों की रोकथाम के लिए ८५ गाँवों में एक अभियान किया गया। १०२ ग्रामीण बैठकों में बैनरों और फ़्लैश कार्डों के माध्यम से लोगों को संदेश दिया गया। ७४३ स्वयं सहायता समूहों ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई और ८४८६ महिलाओं ने इन बैठकों में भाग लिया।

जलजनित रोगों के लिए
स्वयं सहायता सेवकों द्वारा नाटक की प्रस्तुति

१. प्रशिक्षकों ने ग्रामीण बैठकों के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों के नेताओं को जलजनित बिमारियों के विषय में जानकारी दी।

२. ग्रामीण बैठकों एवं व्यावहारिक प्रदर्शन के लिए सूक्ष्म नियोजन किया गया।

३. नेताओं ने पानी से उत्पन्न रोगों और सूक्ष्म नियोजन की स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ जानकारी बाँटी।

४. सामुहिक गतिविधियाँ : यहाँ ओआरएस बनाने के विषय में बताया गया। साथ ही समुदाय को कैसे प्रेरित जाये एवं पोस्टर बनाये गये और स्वास्थ्य सामग्री भी प्रदान की गई।

५. विभिन्न समूहों द्वारा ग्रामीण बैठकें आयोजित की गई जहाँ सूक्ष्म नियोजन सत्रों में बनाये गये कर्तव्य सदस्यों सौंपे गये।

हरियाणा में विकास कार्यक्रमों के समर्थन के लिए इंडिया डेवलपमेंट रिलीफ़ फंड, टॉम सार्जेंट और टाईड्ज़ फाउंडेशन, USA का हार्दिक आभार।

हिमाचल में अर्पणा

पहाड़ी लोगों के लिए जीवनदायी - निःशुल्क विशेषता शिविर

अर्पणा के डलहौज़ी केन्द्र में ७ निःशुल्क स्वास्थ्य और नैदानिक शिविर आयोजित किये गये।

स्त्री रोग ऑपरेशन - पिछले शिविरों में से ९ रोगियों के सत्यम अस्पताल, सुलतानपुर में डॉ हेमंत शर्मा द्वारा ऑपरेशन किये गये जिसकी सारी व्यवस्था अर्पणा द्वारा की गई।

नेत्र शिविर - ९ अप्रैल को डॉ छाबड़ा द्वारा ९७ नेत्र रोगियों की जाँच की गई।

स्त्री रोग शिविर - डॉ हेमंत शर्मा द्वारा ५३ रोगियों की जाँच की गई।

न्यूरोसर्जरी और स्पाइन शिविर - १७ एवं १८ अप्रैल को डॉ रामदास द्वारा १६५ रोगियों की जाँच की गई।

बाल चिकित्सा शिविर - २९ व ३० मई को अर्पणा अस्पताल से डॉ तनु गोयल द्वारा ३० बच्चों का इलाज किया गया।

सामान्य चिकित्सा शिविर - ८ एवं ९ जून को अर्पणा के डॉ आरआई सिंह द्वारा ११८ रोगियों की जाँच की गई।

एंडोस्कोपी शिविर - २३ एवं २४ जून को डॉ राहुल गुप्ता द्वारा ६० रोगियों की एंडोस्कोपी की गई जहाँ उनके सपुत्र डॉ अमन गुप्ता उनके सहयोगी रहे।

अस्थिरोग शिविर - डॉ प्रशांत राणा द्वारा १४५ रोगियों की जाँच की गई।

डॉ. राहुल गुप्ता एवं डॉ. अमन गुप्ता एंडोस्कोपी करते हुए।

अर्पणा, हिमाचल में विभिन्न निःशुल्क शिविरों के लिए बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली का अत्यन्त आभारी है।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org** and **arct@arpana.org**
Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**

Arpana Ashram

Research

Publications & CDs

Arpana endeavours to share its treasure of inspiration – the life, words and precept of *Pujya Ma*, through the publication of books and cassettes.

Publications

गीता	Rs.300
कठोपनिषद् हिन्दी	Rs.120
श्वेताश्वतरोपनिषद्	Rs.400
केनोपनिषद्	Rs.36
माण्डूक्योपनिषद्	Rs.25
ईशावास्योपनिषद्	Rs.20
प्रश्नोपनिषद्	Rs.50
गंगा	Rs.40
प्रज्ञा प्रतिभा	Rs.30
ज्ञान विज्ञान विवेक	Rs.60
मृत्यु से अमृत की ओर	Rs.36
जपु जी साहिब	Rs.70
भजनावली	Rs.80
वैदिक विवाह	Rs.24
गायत्री महामन्त्र	Rs.20
नाम	Rs.15
अमृत कण	Rs.12
Lets Play the Game of Love	Rs. 400
Bhagavad Gita	Rs.450
Kathopanishad	Rs.120
Ish Upanishad	Rs.70
Prayer	Rs.25
Love	Rs.20
Words of the Spirit	Rs.12
Notes	Rs.10

Bhajan CDs

ईशावास्योपनिषद् (a deluxe 8 CD set)	Rs.2000
स्वरांजलि - भाग १ और २	Rs.175each
नमो नमा	Rs.175
उर्वशी भजन	Rs.175
हे राम तुझे मैं कहती हूँ - भाग १	Rs.75
गंगा (भाग १ और २)	Rs.75each
राम आवाहन	Rs.75
तुमसे प्रीत लगी हे श्याम	Rs.75
हे श्याम तूने बंसी बजा	Rs.75

For ordering of books, please address M.O./DD to: **Arpana Publications** (payable at Karnal). Kindly add Rs. 25 to books priced below Rs. 100 & Rs. 40 to books above Rs. 100 as postal charges

Arpana Pushpanjali

Hindi/English Quarterly Magazine

Subscription	**Annual**	**3yrs.**	**5yrs.**
India	130	375	600
Abroad	350	1000	1650

Advertisement	**Single**	**Four**
Special Insertion (Art Paper)	10,000	
Colour Page	3500	12,000
Full Page (b&w)	2000	6000
Half Page (b&w)	1200	4000

(Amounts are in Rupees)

Subscription drafts to be addressed to: **Arpana Trust (Pushpanjali & Publications)**

Delhi Contact Person:
Mr. Inderjeet Anand
E - 22 Defence Colony,
New Delhi 110024
Tel: 41553073

Donation cheques to be addressed to: Arpana Trust
(payable at Delhi)

Arpana Trust *- Donations for Spiritual Guidance Activities, Publications, Scholarships and Delhi Slum Project. Regd. under FCRA (Regd, number 172310001) to receive overseas donations.*

Applied Research

Medical Services

In Haryana
- 130 bedded rural Hospital
- Maternity & Child Care
- Family Planning
- Eye Screening Camps
- Specialist Clinics
- Continuing Medical Education

In Himachal
- Medical & Diagnostic Centre
- Integrated Medical & Socio-Economic Centre

In Delhi Slums
- Health care to 50,000
- Immunisations
- Antenatal Care
- Ambulance

Women's Empowerment

Capacity Building
- Entrepreneurial activities
- Local Governance
- Micro-Planning
- Legal literacy

Self Help Groups
- Savings
- Micro credit
- Federation
- Community Health
- Exposure Visits

Gender Sensitization

Income Generation through Handicraft Training Skills

Child Enhancement

Education
- Children's Education
- Vocational Education
- Cultural Opportunities
- Day Care Centres
- Pre-school Care & Education

Health
- Nutrition Programme
- School Health Programme

In Delhi Slums
- Environment, Building Parks & Planting trees
- Housing Project
- Waste Management

Arpana Research and Charities Trust *Exempt U/S 80 G (50% deduction) on donations for the hospital & Rural Health Programmes. Regd. under FCRA (Regd. number 172310002) to receive overseas donations.*

Contact for Questions, Suggestions and Donations:

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director, Arpana Group of Trusts, Madhuban, Karnal - 132037, Haryana.
Tel: (0184) 2380801- 802, 2380980 Fax: 2380810 Email: at@arpana.org / Web site: www.arpana.org

All donation cheques/ DD to be addressed to : ARPANA TRUST (payable at Karnal)